द्वितीय अध्याय

वेच्य उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन

राही मासूम रजा के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन

2.1 आधागाँव

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से यह राही का पहला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में राही जी ने शीआ मुसलमानों के दस परिवारों को गाजीपुर के गंगौली गाँव की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है। यह गाँव उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का एक मशहूर और बड़ा गाँव है। इसमें हिंदू और मुसलमानों की अनेक जातियाँ रहती हैं। परंतु लेखक ने इस उपन्यास में सिर्फ शीआ मुसलमानों की जीवनगाथा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। साथ में अन्य जातियों, संप्रदायों का उल्लेख मात्र किया गया है। इसीलिए लेखक ने इस उपन्यास को 'आधा गाँव' कहना उचित समझा।

प्रारंभ में राही जी अपनी विनम्रता प्रगट करते हुए कहते हैं कि "मैं गाजीपुर की तलाश में निकला हूँ, लेकिन पहले मैं गंगौली में ठहरूँगा। अगर गंगौली की हकीकत पकड़ में आ गई तो मैं गाजीपुर का 'एपिक' लिखने का साहस करुँगा।"[1]

राही पाठकों को सचेत करते हुए कहते हैं कि "यह कहानी न कुछ लोगों की है और न कुछ परिवारों की। यह उस गाँव की कहानी भी नहीं है जिसमें इस कहानी के भले बुरे पात्र अपने को पूर्ण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह कहानी न धार्मिक है, न राजनीतिक। क्योंकि समय न धार्मिक होता है, न राजनीतिक और यह कहानी है समय ही की। वह गंगौली में गुजरनेवाले समय की कहानी है।"[2]

राही जी ने इस उपन्यास में सन् 1927 से 1952 तक के 15 वर्षों के बीच घटी हुई घटनाओं को और गंगौली के शीआ मुस्लिमों पर के प्रभावों को बाँधने की कोशिश की है। यह काल वर्तमान हिंदुस्तान के इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण काल है। सन् 1937 में प्रांतीय विधानसभाओं के लिए पहली बार चुनाव हुए और प्रातों में भारतीय सरकार का पहली बार निर्माण हुआ। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ जिसके परिणामस्वरूप देशव्यापी क्रांति का प्रभावशाली

---

1. राही मासूम रजा - आधा गाँव, पृ. 11
2. वही, पृ. 11

कांड़ हुआ और ब्रिटीश सरकार का क्रूर, अत्याचारी रूप सामने आया। 16 अगस्त, 1946 में मुस्लिम लीग के 'डायरेक्ट एक्शन' की घोषणा हुई, जिसके फलस्वरूप हिंदुस्थान में हिंदू-मुस्लिम दंगे शुरू हुए और अकेले कलकत्ते में 7 हजार निर्दोष लोगों को अपने जान से हाथ धोना पड़ा। भयंकर मारकाट के साथ, सन् 1947 में हिंदुस्थान का बँटवारा हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। सन् 1950 में नए संविधान की स्थापना हुई। जमींदारी उन्मूलन के कानून बनाए। सन् 1952 में प्रारंभ में ही चुनाव हुए, सारे देश में जनतंत्र की एक नई लहर का निर्माण हुआ।

उपर्युक्त सभी परिवर्तनाओं का गंगौली के शीआ मुसलमानों पर क्या प्रभाव पड़ा ? उनके जीवन में कैसे परिवर्तन आया ? इसीका वर्णन राही जी ने इस उपन्यास में किया है। आजकल आँचलिक उपन्यास हिंदी में बहुत से पाए जाते हैं, लेकिन राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' यह पहला उपन्यास है, जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे पुर रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकीपण के साथ सामने आता है। यह उपन्यास राही जी का पहला उपन्यास है, जिसका प्रकाशन सन् 1966 में हुआ है।

राही जी ने इस उपन्यास में जमींदारी उन्मूलन की संभावना पर विचार प्रगट किए हैं। मुस्लिमों की एक आशा थी कि, काँग्रेस जमींदारी जरूर खत्म करेगी, क्योंकि काँग्रेस हिंदुओं की पार्टी है और अधिकांश जमींदार मुसलमान हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध का भी इसमें उल्लेख मिलता है। उपन्यास में सिपाहियों की भर्ती के लिए अनेक केंद्रों के खुल जाने की चर्चा है और गंगौली के अनेक युवकों को फौज में शामील होते हुए दिखलाया है। कुछ युवक लड़ाई में काम आते हैं तो कुछ युवक लंगड़े लुले होकर वापस लौटते हैं। गंगौली के अनेक लोग ब्रिटीश सरकार के वफादार हैं। कुछ लोग तो लड़ाई का चंद्रा इकट्ठा करने में मदद करते हैं। कासिमाबाद थाने का थानेदार साम-दाम-दंड़-भेद के सभी दाँव-पेच लगाकर अधिक से अधिक चंदा इकठ्ठा करता है, जिसका कुछ हिस्सा अपने जेब के हवाले करना चाहता है।

विश्वयुद्ध समाप्ति के बाद आज़ादी की संभावना के साथ हिंदू-मुस्लिम दंगे शुरू होते हैं। मुस्लिम लीग की बँटवारा की नीति के फलस्वरूप 'डायरेक्ट ऐक्शन' शुरू होता है और खुले आम मार-काट शुरू होती है। पाकिस्तान निर्माण की घोषणा की घोषणा की जार्ता है, जो

भयंकर अमानवीय नरसंहार का कारण बन जाती है। गंगौली के कुछ शीआ मुसलमान पाकिस्तान चले जाते हैं, परिणामस्वरूप गंगौली के अनेक परिवार टूटते हैं।

कथावाचक मासूम अपने परिवार तथा गंगौली के अन्य शीआ परिवारों की कथा सुनाने के लिए घटनाओं का सूत्रपात अपने बचपन से करता है। उसके पिताजी गाजीपुर की जिला कचहरी में वकालत करते हैं। मोहर्रम के दिनों में कथावाचक मासूम का परिवार हरसाल अपने गाँव गंगौली के घर में आकर रहता है। छः सात वर्ष का मासूम अपने परिवारवालों का और गाँव के लड़कों के साथ अपने अनुभवों का चित्रण करता है।

राही जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता का भी चित्रण किया है। पड़ोस के गाँव के जमींदार ठाकुर जयपाल सिंह अतिवादी हिंदुओं से बफातीया की रक्षा करते हैं और गाँव की समस्त मुस्लिमों की रक्षा करते हैं। राही जी ने हिंदू-मुस्लिमों के सहयोग और सहअस्तित्व का विस्तृत चित्रण किया है। मुसलमानों की अनेक जातियों और उनके पारस्पारिक भेदभाव का उपन्यास में विस्तृत विवेचन हुआ है। इस भेदभाव का रूप धार्मिक नहीं बल्कि अपना वर्चस्व स्थापित करना है। अनेक लड़ाइयों और फौजदारियों का चित्रण इसमें दिखाई देता है।

राही ने अपने समाज की झूठी, खोखली धार्मिकता का, उसके अंधविश्वास, अशिक्षा, अज्ञान का चित्रण विस्तार से किया है।

राही ने मोहर्रम के जुलुस का बड़ा प्रभावशाली वर्णन किया है। सुंदर से सुंदर ताजिए बनाने का एक तरह का जनून सवार होता है और स्पर्धा के कारण अनेक झगड़े होते हैं। परिणामस्वरूप अनेक लोग घायल होते हैं। कथावाचक राही ने अपनी पट्टी के ताजिए को बड़ा दिखालाया है, जिससे उत्तर पट्टीवालों में ईर्ष्या पैदा होती है। परिणामस्वरूप दोनों पट्टियों में लाठियाँ चलती हैं।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपन्यास में राही मासूम रजा ने शीआ समाज की जड़ता और अज्ञान में डूबी हुई मानवता को प्रस्तुत किया है।

राही जी का उपन्यास लिखने का यह उद्देश्य है कि शीआ और सुन्नी दोनों संप्रदायों के दृष्टिकोणों में भेद दिखाकर शीआओं को अधिक समझदार और विवेकशील बताने का

प्रयास किया है। क्योंकि शीआओं ने न पाकिस्तान की माँग की थी और न ही पाकिस्तान बनाने में मुस्लिम लीग की मदद की थी। उल्टा शीआओं ने पाकिस्तान का विरोध किया था और पाकिस्तान बनने के बाद ज्यादातर शीआओं ने पाकिस्तान जाने से इन्कार किया था। इस प्रकार शीआओं की श्रेष्ठता, बुद्धिमत्ता और देशभक्ति को लेखक यहाँ बताना चाहता है, ताकि आगे चलकर हिंदुस्थान में उनकी ओर कोई भी शक और शंका की नजर से न देखे, बल्कि उनके बड़प्पन की धाक वैसी की वैसी बनी रहे। राही जी ने इस उपन्यास में शीआओं की धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक रीति-रिवाजों का विस्तृत वर्णन किया है, जिसके कारण यह उपन्यास शीआओं का सामाजिक दस्तावेज बन गया है। उपन्यास की कथा खड़ीबोली में कही गई है। उपन्यास में अरबी-फारसी के शब्दों से बचने की कोशिश की गई है, लेकिन इसमें वर्णनों एवं विवरणों में अनेक ऐसे शब्द हैं, जिन्हें साधारण हिंदी का पाठक समझ नहीं सकता।

2.2 हिम्मत जौनपुरी -

राही मासूम रजा का दूसरा उपन्यास है- 'हिम्मत जौनपुरी'। यह उपन्यास मार्च, 1969 में प्रकाशित हुआ है। उपन्यास आकार से बहुत छोटा है। उपन्यास का नायक लेखक का दोस्त ही है। लेखक दोनों का परिचय देते समय कहते हैं- ''श्री हिम्मत जौनपुरी की कहानी एक ऐसे हिहत्थे की कहानी है, जो जीवनभर जीने का हक माँगता रहा। जो एक सीन से दूसरे सीन में डीजाल्व होता रहा और जो डिजाल्व होने की इसी कोशिश में एक दिन फेडआऊट हो गया। मरनेवाले ने अपने पीछे एक धाँस फिल्मी सब्जे कट, मंजन की कुछ पुड़ियाँ और नामर्दी दूर करनेवाले भस्म की शीशियाँ छोड़ी। उसने एक कहानी भी छोड़ी।''[1]

उपन्यास के नायक का नाम है- हिम्मत जौनपुरी। हिम्मत के पिता का नाम शेख सलामत अली 'नादिर' जौनपुरी है, वे एक बहुत बड़े कवि थे। उन्हें घर से निकाल दिया गया था। घर से निकाल देने के बाद नादिर जौनपुरी नौकरी करने लगे, लेकिन उनके पिता को यह अच्छा नहीं लगा। नादिर जौनपुरी ने इमाम बाँदी नामक कोठेवाली से शादी की। वे अलग घर बसाकर रहने लगे, क्योंकि उनके पिता इस शादी के खिलाफ थे। नादिर की माँ सुक्कन अपने बेटे से मिलने और बहू को देखने नादिर के घर जाती है। सुक्कन पहले तो बहू इमामबाँदी से नफ़रत करती है, लेकिन

---

1. राही मासूम रजा - हिम्मत जौनपुरी, पृ. 51

बाद में उसे बहू के रूप में अपनाती है। सुक्कन बेटे और बहू से मिलने तो चली जाती है, लेकिन उसके पति उसे विरोध करते हैं। फिर भी सुक्कन चली जाती है। इसका अंजाम यह होता है, सुक्कन के पति आरजु जौनपुरी उसे तलाक देने की धमकी देते हैं।

सुक्कन यह सब अपने बेटे, बहु और देवर शेख सुबहानल्लाह 'बर्क' जौनपुरी को जब बताती है, तो बर्कसाहब उसे मुकदमा पेश करने की सलाह देते हैं। मुकदमा पेश किया। सुक्कन मुकदमा हार गई लेकिन सुक्कन को महिने 5 रुपए देने का फैसला किया गया। यह फैसला हाजीसाहब याने की आरजु जौनपुरी के वकील ने किया था। "लेकिन हुजूरेवाला मोर मोवाक्किल यह नहीं चाहता कि उनकी जौज मनबूला की बाकी जिंदगी तकलीफ में गुरज इसलिए मेरा मोवाक्किल ताहयात पाँच रुपया महीना देते रहने का हलक उठाता है।"[1]

जिस दिन मुकदमा समाप्त हुआ था, उसी दिन बरसात की एक सड़ी हुई दोपहर में श्री शेख मुबारक अली हिम्मत का जन्म हुआ था, अर्थात् उपन्यास के नायक ने जन्म लिया था। कुछ ही दिनों में आरजु जौनपुरी की साँप के काटने से मौत हो गई। आरजु जौनपुरी के मौत के बाद बर्क जौनपुरी ने घर पर कब्जा कर लिया। सुक्कन और उसका बेटा नादिर जौनपुरी घर माँगने गए, तो बर्क जौनपुरी और नादिर जौनपुरी को मीरसाहब के जरीए हवालात में बंद कर देते हैं। नादिर जौनपुरी बाबू महावीर प्रसाद की जमानत से छूट गए।

हिम्मत जौनपुरी स्कूल जाने लगा, लेकिन उसे सन् बयालिस में स्कूल से निकाला गया। बर्क साहब कट्टर काँग्रेसी थे, इसकारण पाकिस्तानबनने के बाद वो पाकिस्तान चले गए। हिम्मत लीला चिटनिस नाम के लड़की पर आशिक था। बाद में मुंबई भाग गया। चौदह बरस बाद हिम्मत और लेखक की भेंट हो गई। हिम्मत लेखक से फिल्मी जगत् की बातें करने लगा। कुछ दिनों बाद एक दिन हिम्मत लेखक के घर आकर फिल्म की कहानी लिखने की लेखक को बिनती करता है। हिम्मत जुबैदा नामक की एक और लड़की से प्यार करता था और वो उसे अपने फिल्म की हिरोईन बनाना चाहता था। कुछ दिन बीत गए। लेखक एक दिन, रात को घर वापस आ रहा था, उसने हिम्मत को माहिम के चौराहे पर देखा। हिम्मत उसी वक्त बेस्ट कंपनी की बस के नीचे मर गया। उसके हाथ में रेल के टिकट थे। उसके मरने की खबर नादिर माँमू को दी गई।

---

1. राही मासूम रजा - हिम्मत जौनपुरी, पृ. 8।

उपन्यास के तीसरे हिस्से में राही जी ने हिम्मत माहिम के चौराहे पर क्यों खरा था ? इसका कारण बताया है। वो जमुना को लेकर गाजीपुर जानेवाला था, लेकिन वो उसके साथ नहीं गई। तो हिम्मत ने सोचा ये दो टिकट बेकार में खराब हो जाएँगें, इसलिए वो कह रहा थाकि 'गाजीपुर दो सवारी। गाजीपुर दो सवारी'।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने हिम्मत जौनपुरी के जीवन चरित्र के द्वारा भारती जीवन के संदर्भ में मुस्लिम समाज के संस्कारों के अंतर्द्वंद्वों का चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। साथ में मुंबई महानगर की पृष्ठभूमि में मध्यवर्गीय भारतीय नागरिकों की समस्याओं का चित्रण किया है। लेखक ने इस उपन्यास में किस्सा गोई शैली अपनाई है।

2.3 टोपी शुक्ला -

राही जी का तीसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है- 'टोपी शुक्ला', जो सन् 1937 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में समय की कहानी है। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद हिंदू-मुस्लिम जनता के दिल में भाव उत्पन्न हुए थे, उसका चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है। राही जी ने देशविभाजन के बाद हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगों को देखा है और अनुभव भी किया है। राही जी ने टोपी शुक्ला जैसे कई हिंदू दोस्तों के मुस्लिम प्यार का भी अनुभव किया है। लेखक ने यहाँ हिंदू और मुसलमानों की आत्मा में प्रवेश कर मानवीय संवेदनाओं को उजागर करने की चेष्टा की है।

टोपी शुक्ला का असली नाम बलभद्र नारायण शुक्ला है। उसके पिता का नाम डॉक्टर पंडित शभृगुनाराण नीले तेलवाले है। उन्हें चुनाव लड़ने का शौक था, लेकिन चुनाव में हरबार हारते थे। डॉक्टर साहब फारसी के रसीया और मसनवी मौलाना रूस के दीवाने थे। इनके परिवार की हालत अच्छी थी, घर में नौकर नौकरानियाँ थी। टोपी की माँ का नाम रामदुलारी था, वह भोली-भाली धार्मिक औरत थी। टोपी को दो भाई थे, बड़े भाई का नाम मुनेश्वर नारायण शुक्ला उर्फ मुन्नीबाबू और छोटे भाई का नाम भैरव नारायण था।

मुन्नीबाबू शहर के एक मुन्नीबाई नाम की कोठेवाली पर फिदा थे। मुन्नीबाई वेश्या थी, लेकिन उसने धर्म का दामन नहीं छोड़ा था, उसने घरमें एक कोठरी में शिवालय बनवाया था। मुन्नीबाबू मुन्नीबाई से उम्र में छोटे थे। मुन्नीबाबू मुन्नीबाई के कारण विवाह से इन्कार करते थे,

लेकिन अंत में उन्हें पंडित सुधाकर लाल की बेटी लाजवंती से विवाह करना पड़ा। लाजवंती कुरूप थी, सिर्फ दहेज के कारण उसे डॉक्टर साहब ने स्वीकारा था। टोपी की सूरत खराब थी, परंतु वह शर्मिला था। खराब सूरत के कारण उसकी दादी नाराज होकर उसकी माँ को गालियाँ देती थी। टोपी के दादी का नाम सुभद्रादेवी था, वो फारसी भाषा को पसंद करती थी और हिंदी से नफरत। टोपी बदसूरत होने के कारण उसे नए कपड़े कभी नहीं मिले, मुन्नीबाबू के पुरानी कपड़े इन्हें मिलते थे। घर में टोपी की उपेक्षा होने लगी। इसकारण टोपी एक दिन घर से भागा।

टोपी जब घर से भागा तो इफ्फन नामक लड़के से जा मिला। इफ्फन इकलौता बेटा था। टोपी, इफ्फन के घर जाता है, तो उसे मालूम होता है, इफ्फन मुसलमान है और वो उनके घर में कुछ भी नहीं खाता। टोपी और इफ्फन दोनों दोस्त बन गए। इफ्फन के दादा और परदादा मौलवी थे। इफ्फन के पिता का नाम सय्यद मरतुजा हुसैन है। इफ्फन अपने दादी से बहुत प्यार करता था। टोपी भी इफ्फन की दादी से ही प्यार करता था, क्योंकि वह उसे अपनी दादी से अच्छी लगती थी।

एक दिन टोपी घरवालों के साथ भोजन के लिए बैठता है, तो अचानक उसके मुँह से अम्मी शब्द निकलता है, घरवाले चकरा जाते हैं, लेकिन बाद में शांत होते हैं। पर उसकी माँ ने उसे बहुत पीटा। इफ्फन की दादी मरती है, तो टोपी कहता है कि उसकी दादी अगर मरी होती तो अच्छा होता, लेकिन इफ्फन कुछ नहीं बोलता। इफ्फन के पिता का ताबादला मुरादाबाद हो गया, तो इफ्फन के घरवाले मुरादाबाद चले गए और टोपी अकेला रह गया। स्कूल में भी टोपी हरबार फैल हो जाता है, तो उसके दोस्त आगे निकल जाते हैं।

टोपी कुछ नए लोगों से मिला तो उसे पता चलता है कि गाँधी को मारनेवालों की पार्टी के यही लोग हैं, तो टोपी डर गया। लेकिन टोपी इन लोगों से अकसर मिलता रहा। इन्हीं लोगों के द्वारा टोपी को मालूम हुआ कि मुस्लमानों ने देश का सत्यानाश कैसे किया है, तो टोपी एक सच्चे भारतीय और सच्चे हिंदू की तरह वह मुस्लिमों से नफरत करने लगा।

इधर इफ्फन दूसरे रास्ते पर सफर कर रहा था। इफ्फन को राजनीति पसंद नहीं थी, उसे तो साहित्य पसंद था। लेकिन साहित्यकारों से और उनकी कृतियों से उसे पता चला कि आज़ादी में कुछ खोट जरूर है।

"कौन आज़ाद हुआ,
किसके माथे से गुलामी की स्याही छुटी।
अब यह पंजाब नहीं, एक हँसी खाबसी।
अब यह दो आब है, सेह आग है पंजाबनी॥
जामा मस्जिद में अल्लाह की जात थी।
चाँदनी चौक में रात ही रात थी।
आस कच्चे घड़े की तरह बह गयी।
सोहनी बीच तुफान में रह गयी।
आज आखां वारिस शाह नूं।
कित्तो कबरां विच्यों बोल॥
ते अज किताबें-इश्क दा।
कोई अगला वरका खोल॥"[1]

इफ्फन स्कूल में फूटबाल खेल रहा था, तो किसी कारणवश मास्टरजी ने उसे खेल से बाहर निकाला, वेा सोचने लगा कि अगर वो मुसलमान न होता, तो उसे ऐसा न निकाला होता। यह सब पाकिस्तान बनने का नतीजा था, पूरा वातावरण ही बदल गया था। इस घटना के कारण इफ्फन हर बात में हिंदू-मुसलमान फर्क करने लगा। इफ्फन जवान हो गया। पिता के मर जाने के बाद घर का सारा बोझ उस पर आ पड़ा। उसे डिगरी कॉलेज में इतिहास के अधिव्याख्याता की नौकरी मिल गई। लेकिन वहाँ पर सिर्फ एक साल तक नौकरी की, क्योंकि मैनेजिंग कमेटी के मेंबर के लड़के को नौकरी की आवश्यकता थी। इफ्फन पर झूठा इल्जाम लगाया कि वो औरंगजेब की तारिफ करता है और शिवाजी की बुराई करता है। इफ्फन को बाद में मुस्लिम युनिवर्सिटी में नौकरी मिल गई। वहाँ पर उसकी मुलाकात टोपी से हो गई।

टोपी अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में पढ़ता था, स्कॉलरशिप पाने का ख्वाब देखने लगा। लेकिन स्कॉलरशिप किसी मुसलमान लड़के को मिल गई, तो टोपी चकरा गया और कहता है कि पाकिस्तान बनने बाद मुस्लिम युनिवर्सिटी की जरूरत क्या है ? इफ्फन और टोपी दोनों मर गए, वहाँ पर टोपी की मुलाकात इफ्फन की पत्नी सकीना से हो गई। इफ्फन के घर में उसने पहली

---

1. राही मासूम रजा - टोपी शुक्ला, पृ. 48, 49

बार खाना खाया। सकीना सय्यद आब्दी रजा की बेटी थी। सय्यद आब्दी रजा एक खानदानी काँग्रेसी थे। वे बलवों में मारे गए, तो सकीना समझती है कि उन्हें हिंदुओं ने मारा है।

इफ्फन और टोपी हिंदू-मुसलमान समस्यापर बोल रहे थे। इफ्फन सोचता है कि मुस्लमानों के दिल में चोर है। "यह चोर है कि, चूँकि उन्होंने पाकिस्तान बनवा लिया है, इसलिए भारत पर उनका क्या हक रह गया है। भाई हर मुसलमान के दिल में पाकिस्तान की ओर एक खिड़की खुली हुई है।"[1]

युनिवर्सिटी ने टोपी का स्कॉलरशिप बंद किया तो टोपी गाँव चला गया। टोपी मुसलमान लड़की सलीमा से प्यार करता है, लेकिन वह इस बात का जिक्र उस लड़की के पास करने से डरता है। लेकिन घरवालों को यह मालूम होता है कि टोपी किसी मुसलमान लेक्चरर की बीवी सकीना से प्यार करता है तो घरवाले उसकी शादी करने का फैसला करते हैं। रिटायर्ड थानेदार बालकृष्ण की बेटी से शादी पक्की होती है, लेकिन टोपी विरोध करता है।

अंत में टोपी इफ्फन के घर पहुँचता है। वहाँ उसे पता चलता है कि सलीमा की शादी हुई है। इफ्फन नौकरी के कारण परिवारसमेत जम्मू चला जाता है। टोपी अकेला हो गया और उसने आत्महत्या की। उसकी लाश के सिरहाने एक लिफाफा था, उसमें नौकरी का परवाना था। इस प्रकार राही जी ने उपन्यास के अंत में टोपी की मौत दिखलाई है, क्योंकि वे कहते हैं कि टोपी ने परिस्थिति के साथ कभी समझौता नहीं किया।

निष्कर्ष -

राही जी इस उपन्यास द्वारा यह बतलाना चाहते हैं कि सन् 1947 में भारत पाकिस्तान के विभाजन का ऐसा बुरा असर पड़ा कि हिंदू-मुस्लिमों को मिलकर रहना असंभव हो गया। लेखक टोपी की मृत्यु द्वारा यह साबित करना चाहते हैं कि परिस्थिति से समन्वय न करनेवाले को आत्महत्या ही करनी होगी।

2.4 ओस की बूँद -

'ओस की बूँद' उपन्यास राही मासूम रजा का चौथा उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1970 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल मिलाकर छः अध्याय प्रस्तुत किए हैं। 'ओस की बूँद' 127

---

1. राही मासूम रजा - टोपी शुक्ला, पृ. 82

पृष्ठोंवाला उपन्यास है । इस उपन्यास में भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद देश में जो सांप्रदायिक दंगे हुए थे, उनका चित्रण, एक मुसलमान परिवार की कहानी के द्वारा राही जी ने प्रस्तुत किया है। पाकिस्तान निर्माण को लेकर कई झगड़े हिंदू-मुस्लिमों में हुए थे। उन झगड़ों में हिंदू-मुस्लिम दोनों मारे गए थे। बहू-बेटियों की इज्जत लूटी। लोगों के घर उजड़ गए। वैसे देखा जाय तो, झगड़ों का कोई एक कारण नहीं था।

दीनदयाल और वजीर हसन् दोनों दोस्त हैं। उनमें गहरी दोस्ती है। वजीर हसन् प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक थे और मुस्लिम लीग के सदस्य भी थे। वो पाकिस्तान बनाने के पक्षपाती थे। बाद में पाकिस्तान बन तो गया लेकिन वजीर हसन ही खुद पछता रहे थे। वे स्वयं को गुनाहगार मानने लगे, क्योंकि वो उसी सरजमीन पर मरना चाहते हैं। वजीर हसन् हिंदूस्तान को अपना घर मानते हैं और इस घर को नफरत और प्यार से श्रेष्ठ मानते हैं।

"मैं पैगंबर नहीं हूँ कि हिजरत को फलसफा बना लूँ। बड़े बेटे ने जब पाकिस्तान जाने की जिद की तो उन्होंने उसकी आँखों में आँखें डालकर यह कह दिया, "मैं एक गुनहगार आदमी हूँ और उसी सरजमीन पर मरना चाहता हूँ, जिस पर मैंने गुनाह किए हैं।"[1] वजीर हसन् का बेटा अलीबाकर आखिरकार पाकिस्तान चला जाता है। अलीबाकर के पाकिस्तान जाने से उसकी माँ हाजरा उसके विरह में पागल हो गई। वजीर हसन् को शहला नामक एक पोती थी। शहला की सहेली थी- शहरनाज। शहला, शहरनाज के भाई वहशत से प्यार करती है।

म्युनिसिपैल्टी के चुनाव आते हैं। दीनदयाल चेयरमैन बनाना चाहते थे, लेकिन काँग्रेस का टिकट हयातुल्ला अंसारी को मिला और दीनदयाल को गुस्सा आ गया। इसी बीच दीनदयाल और वजीर हसन् में झगड़ा हो गया और दोनों ने अलग रास्ते बनावाए। वजीर हसन् के मकान के पिछवाड़े में एक पुराना मंदिर था। शहर में दूसरे कई मंदिर थे, लेकिन उन पर किसी-न-किसी का हक था। सिर्फ इसी मंदिर पर किसी का कब्जा नहीं था। मंदिर में पूजा करने के विषय को लेकर हिंदू और मुसलमान झगड़ने लगे। "शहर के मुसलमान जेहाद के लिए सिर को कफ़न बाँधने लगे। हिंदु अलग हो गए कि मियाँ लोगन की तो ऐसी-की-तैसी। रामअवतार देखते-ही-देखते वास्तव में रामअवतार हो गया।"[2]

---

1. राही मासूम रजा - ओस की बूँद, पृ. 19
2. राही मासूम रजा - ओस की बूँद, पृ. 19

एक दिन वजीर हसन् पर मारवाड़ी डोले को लुटते, गजानंदजी के दुकान में आग लगाने की साजिश में उन्हें गिरफ्तार किया। कुछ समय बाद वे रीहा हुए। उन्हें दिनदयाल बताया कि शंख को रामवतार ने कुएँ में फेंक दिया है और हिंदूओं ने रामवतार को मारा वे अस्पताल में है। वजीर हसन् ने कुएँ शंख को निकाल दिया और मंदिर में गए। वजीर हसन् को ऐसा लगा कि, मंदिर में हिंदुस्तान का इतिहास और भविष्य उन्हें खड़े होकर देख रहा है। मंदिर के चारों ओर पी. ए. सी. के सिपाही सो रहे थे। उन्होंने शंख फूँका, इतने में सिपाही ने उन पर गोली चलाई, वजीर हसन् मर गए, लेकिन वो कैसे मरे, इसका पता किसी को नहीं था। सब लोगों को गलतफहमी हुई थी कि शंख अपने आप कुएँ से बाहर आया।

सब लोग उनकी कब्र बनाने की सोचने लगे। बेहाल शाह नामक आदमी उनके पड़ोस में था, उसने वजीर हसन् की कब्र उसके मृत्यु की जगह बनाने का फैसला किया। लेकिन हिंदुओं ने इस फैसले को विरोध किया। हिंदुओं के विरोध के कारण उनकी पत्नी शहला ने मुकदमा दाखिल किया। मुदमें की शुरूवात हुई। शहला मुकदमें के विषय में चर्चा करने के लिए शिवनारायण के घर आती-जाती थी। ऐसे ही एक दिन वो शिवनारायण के घर जा रही थी, अचानक बलवे शुरू हो गए। बेहालशाह ने शहला को बलवों से बचाने के लिए अपने घर में छिपा लिया। बेहालशाह की नियत में खोट थी, उसने शहला के साथ बलात्कार किया। इतने में बलवाई वहाँ आ गए और दोनों को मार डाला।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपन्यास द्वारा राही जी यह दिखलाना चाहते हैं कि पाकिस्तान निर्माण के बाद सांप्रदायिक दंगों के कारण मुसलमानों की कितनी हानि हुई ? राही जी और एक बात बताना चाहते हैं कि अपनी जन्म भूमि का महत्त्व धर्म से भी बढ़कर होता है।

2.5 दिल एक सादा कागज

'दिल एक सादा कागज' राही जी का पाँचवाँ उपन्यास है, जो सन् 1973 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का निर्माण तब हुआ है, जब लोगों ने पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार किया था और हिंदू-मुस्लिम शांति से रहने लगे थे। 240 पृष्ठवाले प्रस्तुत उपन्यास के नायक का नाम रफ्फन है। उसके पिता अलि हैदर जैदी नामी वकील थे। रफ्फन की पत्नी का नाम जन्नत है।

रफ्फन की पढ़ाई समाप्त होने के बाद कुछ ही दिनों में उसके पूर्वजों का घर 'जैदी विला' परिवारवालों के पाकिस्तान जाने के कारण कस्टाडियम के हाथों में चला गया। रफ्फन की शादी उसकी प्रेमिका जन्नत से होती है। रफ्फन एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी करता है। उसका स्कूल की वर्कींग कमीटी के लड़के से झगड़ा होता है, वह पहले ही दिन सारे छात्रों का प्यारा होता है। उसके बाद नारायण गंज के डिग्री कालेज में उसे नौकरी मिल गई।

रफ्फन जिस नगर में रहता था, उस नगर के निकट ही एक बड़ा औद्योगिक केंद्र बन रहा था। रफ्फन का वहाँ पर आई हुई अनेक परिचित लड़कियों के साथ पढ़ाई के समय संपर्क होने लगा। उसकी पत्नी इन संबंधों को जानकर उदास रहने लगी। एक दिन रफ्फन पर यह आरोप लगाया गया कि उसने शारदा नामक एक युवती पर बलात्कार किया है। रफ्फन के विरुद्ध न्यायालय में मुकदमा दाखिल किया जाता है। रफ्फन को स्कूल के वर्किंग कमीटी के मेंबरों ने नौकरी से निकाल दिया। फिर वह मुंबई आकर वहाँ फिल्मों के लिए कहानियाँ लिखने लगा। धीरे-धीरे से रफ्फन एक महान कहानीकार और 'प्रोड्यूसर' बन जाता है।

एक दिन उसे खबर मिलती है कि उसके भाई, जो पाकिस्तान चले गए थे और उनकी पुत्री रिफ्युजी केंप में पाए गए हैं, पाकिस्तान और बंगला देश की लड़ाई के समय वे भारत लौट आए हैं। रफ्फन उनकी मदद करने लगता है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अपने उपन्यास का आधार बदल दिया है। जब यह उपन्यास लिखा गया तब सांप्रदायिक दंगे कम हुए थे। राही जी इस उपन्यास में राजनैतिक विषय को छोड़कर सामाजिक विषयों की ओर मुड़े हुए दिखाई देते हैं।

2.6 सीन-75

'सीन-75' राही मासूम रजा का छठा उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1977 में प्रकाशित हुआ है। 31 पृष्ठवाले उपन्यास में फिल्मी संसार का चित्रण किया है। राही जी ने इस उपन्यास में फिल्मी दुनिया से संबंध जोड़नेवाले व्यक्तियों के जीवन की असफलता और उनके दुःखमय अंत का चित्रण बखुबी से किया है।

अली अमजद एक मध्यमवर्गीय था। वह असतंष्ठ था। उसने एम्. ए. और एल. एल. बी. की उपाधियाँ पाई हुई थी। अली अमजद फिल्म रायटर था, और वो डिक्रूज गेस्ट हाऊस में अपने दोस्त हरिश राम तथा अली मुल्लाह खाँ के साथ रहता था।

अली अमजद फंदा जी के लिए कहानियाँ लिख रहा था। लेकिन उसने अपना नाम बदल दिया था, गौरीशंकर लाल नाम धारण करके वो अपना काम कर रहा था, क्योंकि फंदाजी मुसलमानों से नफरत करते थे। माई नाम की एक औरत थी, उसका दारू का अड्ड़ा था, सभा फिल्मी दुनिया वहाँ पीने जाती। वी. डी. भी जाता था। माई के मरने के बाद वो अड़ड्डा डिसुजा चलाती थी। वी. डी. तीन फिल्मों में काम किया था। वी. डी. और अली मुल्लाह हर वक्त झगड़ते रहते थे। लेकिन अली मुल्लाह ही वी. डी. का बोझ उठाता था।

अली अमजद प्लैट में रहने लगा। मनचंदानी ने उसे प्लैट दिलवाया था। उसी बिल्डींग में श्रीमती रमा चोपड़ा और भोलानाथ रमा रहते थे। भोलानाथ को खटकजी कहते थे। भोलानाथ चाहते थे कि बिल्डिंग के नौकर उन्हें मालिक माने। भोलानाथ की पत्नी रमा, श्रीमती सरला मिढ़ा की सहेली थी। वे दोनों हमेशा साथ रहती थीं।

मिढ़ा साहब कार लेकर भोलानाथ से मिलने कॉलोनी में गए, इससे कॉलोनी में भोलानाथ की इज्जत बढ़ गई। मिढ़ा साहब को रमा अच्छी लगती, इस कारण वे कॉलोनी में अक्सर आते जाते रहे। यह मिढ़ा साहब हमेशा दूसरों की बीवीयों में दिलचस्पी लेते थे। एक दिन मौका पाकर मिढ़ा साहब सरला की ओर से रमा को देखने गए। जबरदस्ती उसका सीर दबाने लगे, तो इतने में खटकजी वहाँ आ गए। खटकजी सब कुछ समझ गए, उन्होंने फौरन रमा से मिढ़ा को राखी बँधवाई।

रमा ने सरला से दस हजार रुपए लेकर उसे सूदपर चलाना शुरू किया और सूरसिंगार में एक प्लैट बुक करने के काबील हो गई। मनचंदानी के पास बिल्डींग की प्लंबिंग का ठिका था। मनचंदानी और रमा में दोस्ती हो गई। रमा सिर्फ मनचंदानी की दोस्त बनी, बाकी कुछ नहीं, लेकिन खटकजी को शक हो गया और उन्होंने मनचंदानी को भी राखी बँधवाई।

खटकजी की लिजा नाम की नौकरानी थी, वे उस पर फिदा थे। लेकिन लिजा का एक ब्वायफ्रेंड था, जिसका नाम था पीटर। पीटर का असली नाम रामनाथ था। रामनाथ एक दिन

ईरानी चायखाने में कहानी सुना रहा था, वहाँ श्री फंदा पटयालवी सीन लिख रहे थे, उन्होंने रामनाथ की कहानी सुनी। फंदाजी ने रामनाथ को अपना नौकर बनवाया। रामनाथ को नौकर बनवाने के पीछे एक मकसद था। मकसद यह था कि रामनाथ कहानी बनाता था, तो फंदाजी इससे कहानी सुनकर स्वयं के नाम पर वो कहानी चला सकते थे। रामनाथ मिडिल पास लड़का था, उसके पिता बाबू चंद्रिका प्रसाद कानपुर की म्युनिसिपल कार्पोरेशन में क्लर्क थे।

रामनाथ ने पहला इश्क फंदाजी की बेटी पुष्पलता से किया। पुष्पलता बदसुरत थी। वह किसी से प्यार नहीं करती थी, इस कारण वह अकेली ही गई थी। फंदाजी अपने काम से घर के बाहर रहते थे, माँ पड़ोसिनों से बातें करना, साड़ियाँ खरीदने, गहने बनवाने में मग्न रहती थी। तो जाहिर है कि पुष्पलता घर पर अकेली रहती थी। रामनाथ भी दिन-रात पुष्पलता के साथ रहने लगा। राधिका एक दिन रात को घर आई, तो रामनाथ को धमेंद्र समझकर उसकी ओर आकर्षित होने लगी। यह सब देखकर पुष्पलता को गुस्सा आ गया। माँ-बेटी में झगड़ा हुआ। रामनाथ इन सब बातों से ऊब गया था रामनाथ ने स्वयं की जगह दोस्त गफ्फार कानपुरी (राय मनोहर) को नौकरी पर लगा दिा और वह स्वयं मिढ़ा साहब के यहाँ गया। गफ्फार भी पुष्पलता में फँस गया, इतना ही नहीं तो उसे भगाकर ले जाने की योजना भी बनवाई। लेकिन रामनाथ ने उसे रोका।

फंदाजी के घर के सामनेवाले प्लैट में एक मदहोश साहब रहने आए। मदहोश साहब का बर्ताव एक सख्त मुसलमान जैसा था, लेकिन एक दिन सबको पता चला कि वे हिंदू हैं।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपन्यास में राही जी ने फिल्मी जगत के लोगों के जीवन की असफलता और उसका दुःखद अंत कैसे होता है ? इसका विस्तार के साथ चित्रण किया है। साथ में मुंबई महानगर के भड़किले आकर्षण से आदमी किस तरह उसमें फँसता जाता है, इसका चित्रण किया है।

2.7 कटरा बी आर्जू -

राही मासूम रजा का सातवाँ उपन्यास है- 'कटरा बी आर्जू'। यह उपन्यास राजनैतिक समस्या पर आधारित है। इसका प्रकाशन सन् 1978 में हुआ है। उपन्यास का नायक

देशराज है, जो एक मोटर मैकेनिक है और नायिका का नाम बिल्लो है, जो एक लाँड्री चलाती है। देशराज और बिल्लो शादी करके उत्तर प्रदेश के एक गाँव में रहते हैं। दोनों एक-एक पैसा जमा करते हैं। क्योंकि उन्हें घर बनवाना था।

देश ने अपना खुद का मोटर वर्कशाप खोला। यह वर्कशाप खोलने के लिए उसे इंदिराजी ने उसे बँक से कर्जा दिलवा दिया था, इस कारण देश उस वर्कशाप का नाम 'इंदिरा मोटर वर्कशाप' रखता है। देश ने अपने लिए एक मोटर भी तैयार की थी। देश को अखबार से मालूम होता है कि राष्ट्रपति ने इमर्जेंसी लागू कर दी है। चीनी डालडे के भाव गिरे, जुलुस बंद हुए, हड़ताल घेराव बंद हुए अर्थात आदमी, आदमी बनकर जीने लगे। बिल्लो ने भी लाँड्री के भाव कम किए थे।

इमर्जेंसी के समय देशराज के एक मित्र आशाराम के संबंध में पुलिस ने उससे पूछताछ की। ठीक उत्तर न देने पर उसे खूब पीटकर घायल कर दिया गया। उसी वक्त देश पागल हो गया। फिर उसको उसी हालत में घर पहुँचा दिया गया। संजय गांधी के स्वागत के लिए रास्ते का काम चल रहा था। देशराज की पत्नी को अपना घर छोड़कर अन्यत्र जाने के लिए कहा गया। लेकिन उसने इन्कार कर दिया। जब घरों को तोड़कर रास्ता चौड़ा किया जाने लगा तब बिल्लों एक बुलडोजर की टक्कर से घायल होकर अपनी नवजात पुत्री समेत मर गई।

निष्कर्ष -

हिंदू-मुसलमान भारत में शताब्दियों से शांतिपूर्वक मिल-जुलकर रहते आए हैं। केवल राजनैतिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए ही उन्हें समय-समय पर उकसाया जाता है। यही विचार लेखक यहाँ स्पष्ट करना चाहता है। इमर्जेंसी के समय उच्च श्रेणी के स्वार्थी तत्त्वों ने कैसे अंधकार मचाया था। स्थानीय नेता लोग और नौकरशाही ने जनता पर कैसे खुलकर अत्याचार किया इसका राही जी ने प्रभावोत्पक रूप में चित्रण किया है। इस उपन्यास में जनता के बीच इंदिरा गांधी की लोकप्रियता और धीरे-धीरे उनके प्रति पनपते असंतोष की प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में जस्टिस सिन्हा के फैसले और आपात की घोषणा का चित्रण है। आपात काल के दौरान घटित सभी कृत्यों-एनकाऊंटर, नसबंदी, यूथ काँग्रेस तथा संजय गाँधी तक का बेबाकी से चित्रण किया है जो आँखों के सामने उस समय का दृश्य खरा कर देता है।

समन्वित मूल्यांकन -

'आधा गाँव' उपन्यास राही जी का पहला उपन्यास है। राही जी ने इस उपन्यास में सन् 1927 से सन् 1952 तक के 15 वर्षों के बीच घटी हुई घटनाओं का वर्णन किया है। इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1966 में हुआ है। 15 वर्षों के बीच जो घटनाएँ घटी, उसका शीआओं पर क्या प्रभाव पड़ा ? उनके जीवन में कैसे परिवर्तन आया, इसका राही ने यथार्थ चित्रण किया है। आँचलिक उपन्यास तो हिंदी में बहुत से पाए जाते हैं। लेकिन राही जी का 'आधा गाँव' यह पहला उपन्यास है, जिसमें ग्रामीण जीवन अपने भरे-पुरे रूप में पूरी सच्चाई, तीव्रता और बेबाकी से हमारे सामने आता है। राही जी ने इसमें शीआओं की धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक रीति-रिवाजों का विस्तृत रूप से चित्रण किया है, जिसकी वजह से यह उपन्यास शीआओं का सामाजिक दस्तावेज बनकर हमारे सामने आया है।

राही मासूम रजा जी का 'हिम्मत जौनपरी' तीन भागों में विभाजित उपन्यास है। प्रथम भाग में 'हिम्मत जौनपुरी के पूर्वजों के पारिवारिक जीवन का परिचय मिलता है और हिम्मत जौनपुरी की मुंबई में हुई मृत्यु का चित्रण पाया जाता है। तीसरे भाग में मुंबई के जीवन का परिचय पाया जाता है। इस उपन्यास में हिम्मत जौनपुरी के माध्यम से भारतीय जीवन के संबंध में मुस्लिम समाज के संस्कारों के अंतर्गत संघर्ष का चित्र दिखाई देता है। इसके साथ ही मुंबई महानगर की पृष्ठभूमि में मध्यमवर्गीय नागरिकों की समस्या भी प्रस्तुत है।

राही जी का तीसरा उपन्यास 'टोपी शुक्ला' राजनैतिक समस्या पर आधारित लिखा हुआ है। इस चरित्रप्रधान उपन्यास में टोपी शुक्ला के जीवन की पूरी गाथा पाई जाती है। इस उपन्यास के द्वारा लेखक यह बतलाना चाहता है कि भारत पाकिस्तान विभाजन का ऐसा बुरा असर पड़ा कि हिंदू-मुस्लिमों को मिलकर रहना मुश्किल हुआ। लेकिन टोपी की मृत्यु के माध्यम से यह साबित करना चाहते हैं कि परिस्थिति से समझौता न करनेवालों को आत्महत्या ही करनी पड़ती है।

राही जी अपने चौथे उपन्यास 'ओस की बूँद' में यह बताना चाहते हैं कि भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद जो सांप्रदायिक दंगे हुए उसमें मुसलमानों की कितनी हानि हुई ? लेखक ने साथ में जन्मस्थान का महत्त्व धर्म से भी बढ़कर होता ह्व, इसका चित्रण बहुत मार्मिक ढंग

से किया है। राही मासूम रजा जी ने 'दिल एक सादा कागज' की रचना तब की जब देश के सांप्रदायिक दंगे कम हुए थे, लोगों ने पाकिस्तान के निर्माण को स्वीकारा था। इसमें इफ्फन के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया है। इफ्खफन के जीवन की घटनाएँ और लेखक के जीवन की घटनाओं में पूरा साम्य दिखाई देता है।

राही जी के छठा उपन्यास 'सीन-75' में मुंबई महानगर के आकर्षित जीवन के विविध दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास किया है। इसमें फिल्मी जगत से संबंधित व्यक्तियों के जीवन की असफलताओं और दुःखमय अंत का चित्रण पाया जाता है। साथ में फिल्म जगत के व्यक्तियों की हृदयहीनता का विवेचन भी इस उपन्यास में पाया जाता है। राही जी का सातवाँ उपन्यास 'कटरा बी आर्जू' राजनीतिक समस्या पर आधारित है। इसमें 'इमर्जेंसी' के समय सरकारी अधिकारी जनता को कितना सताते हैं ? इसका चित्रण दिखाई देता है। साथ में इमर्जेंसी के समय में स्थानीय नेताशाही और नौकरशाही ने जनता पर कैसे खुलकर अत्याचार किया इसका विवेचन पाया जाता है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि डॉ. राही मासूम रजा जी ने विवेच्य उपन्यासों में मुख्यतः राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का तथा विभिन्न समस्याओं का विस्तार से और यथार्थ चित्रण किया है।